अभिभावकों, शिक्षकों एवं सहपाठियों का सिकल ग्रस्त बच्चों के प्रति विशेष देखभाल

छत्तीसगढ़ राज्य में सिकलिंग बीमारी बहुतायत में पाई गई है। यह एक वंशानुगत रोग है जो कि माता–पिता से मिलने वाली जीन्स से मिलती है। सिकल ग्रस्त बच्चों को खून की कमी, बुखार, हाथ–पैर व जोड़ों में दर्द इत्यादि से हर समय जुझना पड़ सकता है, जिसके कारण वे सामान्य बच्चों की तुलना में अपनी शारीरिक परेशानियों के कारण पढ़ाई अथवा अन्य गतिविधियों में पिछड़ सकते हैं। अतः घर एवं विद्यालयों में ऐसे बच्चों के प्रति कुछ अतिरिक्त ध्यान रखकर उनके जीवन को सरल बनाया जा सकता है। अभिभावकों, शिक्षकों, विद्यालय प्रशासन एवं सहपाठियों को कुछ नीचे दिये बिन्दुओं पर ध्यान देते हुए सिकल सेल एनीमिया (SS) या सिकलिंग से पीड़ित बच्चों की मदद के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए –

☞ विद्यार्थियों को पुस्तकों के दो सेट उपलब्ध कराना

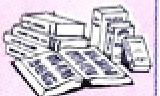

सिकल ग्रस्त विद्यार्थी प्रायः स्वास्थ्य की परेशानियों के कारण शाला में अनुपस्थित हो सकता है। ऐसी स्थिति में किताबों के दो सेट होने से शाला में एवं घर में भी पढ़ाई कर सकता है। साथ ही इससे किताबों का भारी बस्ता उसे हर रोज ढोने की आवश्यकता भी नहीं पड़ेगी।

☞ विद्यालय के समय हमेशा पानी की बोतल साथ रखा जाना

सिकल ग्रस्त बच्चे को निर्जलीकरण (Dehydration) की स्थिति से हर समय बचाना चाहिए। इसके लिए उसे हर समय पानी अथवा कोई न कोई तरल पदार्थ पीते रहना चाहिए। विद्यालय में भी थोड़ी–थोड़ी देर में पानी पीने की अनुमति शिक्षक द्वारा देनी चाहिए। साथ ही शिक्षक एवं सहपाठी भी उसे पानी पीने की याद दिलाते रहे।

☞ समय–समय पर पेशाब जाने की अनुमति

सिकल ग्रस्त विद्यार्थी को अन्य विद्यार्थियों से अधिक पानी या अन्य पेय पदार्थ लेना होता है, जिसके कारण उसे अन्य विद्यार्थियों की तुलना में अधिक बार पेशाब जाना पड़ सकता है । अतः शिक्षकों को चाहिए कि वे विद्यार्थी के आग्रह पर उसे समय–समय पर पेशाब जाने की अनुमति अवश्य दें।

☞ शारीरिक श्रम टाला जावे

विद्यालय में शारीरिक व्यायाम अथवा लम्बी दौड़ इत्यादि में भाग लेने से सिकल ग्रस्त बच्चे को परेशानी हो सकती है। अतः ऐसे विद्यार्थी को शारीरिक शिक्षा की क्लास में विशेष छूट दी जानी चाहिए। घर में भी शारीरिक श्रम को टाला जावे।

☞ बाहरी वातावरण से सुरक्षा

सिकल ग्रस्त बच्चों को बारिश, बहुत अधिक गर्मी या बहुत अधिक ठण्ड की स्थितियों में घर के बाहर जाने से रोकना चाहिए, क्योंकि इस तरह का तापमान उसके खून के बहाव में परिवर्तन ला सकते हैं और उसे परेशानी में डाल सकते है।

☞ शिक्षकों एवं सहपाठी मित्रों द्वारा पढ़ाई में मदद किया जाना

सिकल ग्रस्त विद्यार्थी प्रायः स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों के कारण कक्षा में उपस्थित होने से वंचित रह जाते हैं, अतः शालेय गतिविधियों के संबंध में सहपाठी मित्रों द्वारा बताया जाना चाहिए। साथ ही शिक्षकों द्वारा भी ऐसे विद्यार्थियों को अतिरिक्त समय देकर पढ़ाई पूर्ण करने में मदद किया जाना चाहिए।

☞ शाला समय में दवाई का सेवन

चिकित्सक के निर्देशानुसार सिकल ग्रस्त विद्यार्थी को शालेय समय में दवाईयाँ लेनी पड़ सकती है, अतः समय पर दवाई लेने के लिए शिक्षकों एवं सहपाठियों द्वारा याद कराया जाना चाहिए।

सिकल सेल प्रोजेक्ट (छ.ग. शासन के अनुदान से संचालित), बायोकेमेस्ट्री विभाग, पं. ज.ने.स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय, रायपुर द्वारा जनहित में जारी ...